– चिकित्सकोंसे निवेदन –

आयुर्वेदीय चिकित्सा में वनस्पतियोंके स्वरस श्रेष्ठ माने जाते है । किंतु हरसमय विभिन्न वनस्पतियोंके स्वरस उपलब्ध होना वर्तमानमें प्राय: असंभव हो जाता है । हरी वनस्पतियों की अनुपलब्धी तथा स्वरसोंकी छोटी आयुके कारण उनका उपयोग तुरंत ही करना पडता है । इसी कारण आसव तथा क्वाथ व रसायन कल्पोंका निर्माण हुआ । तथापि आसव तथा क्वाथ के उपयोग में रुग्णोंको दिक्कते आती है और रसायन कल्पोके खनिज द्रव्योके कारण उनका प्रयोग सावधानीसे करना पडता है । वनस्पतीयोंके चूर्णोका भी चिकित्सामें उपयोग किया जाता है । परंतु चूर्णोकी मात्रा जादा होने के कारण रुग्ण पूर्ण मात्रामें चूर्णोंका सेवन न करने की आशंका होती है । इसके अलावा बाजारमें मिलनेवाली चूर्णोंकी विशुद्धता तथा विर्यता जाँचना असंभव हो जाता है और चिकित्सा कामयाब होने में असफलता होती है ।

आयुर्वेद शास्त्रमें वनस्पतियोंके घन सत्वोंका प्रयोग दिया है । चूर्ण, आसव, क्वाथ तथा रसायन आदिके उपयोग की जो भी उपरोक्त कठिनाईयाँ दर्शायी गयी है, वह सभी घन सत्वोंमे नही है । घन सत्वोंकी मात्रा अल्प होती है, वह टिकाऊ भी होते है और शरीरमें जल्दी घुल मिलकर अपना प्रभाव दिखाते है ।

एक वनस्पती चिकित्सा (Single Drug Therapy) आयुर्वेदीय चिकित्सामें अपना अलगही महत्त्व रखती है । घन सत्वोंके उपलब्धीसे यह चिकित्सा आसानीसे की जा सकती है । घन सत्वोंकी गोलियाँ (Tablets) उपलब्ध की गयी है जो रुग्ण आसानीसे ले सकता है ।

घन सत्वोंका निर्माण आयुर्वेदीय शास्त्रानुसार किया गया है और खास तौरपर यह ध्यान दिया गया है कि उनके गुणधर्मोंमें कोई बदलाव या कमी ना हो । सभी घन सत्व पानीमें घुलनशील है अत: उनके सेवन के बाद उनका पाचन जल्दी हो जाता है और प्रभाव तुरंत होता है ।

चिकित्सकोंके लिए सभी घन सत्वोंकी विस्तृत जानकारी साथ मे दी है जो चिकित्सकोंको अपने कार्य में लाभदायक सिद्ध हो सकती है ।

***

घनसत्व

(सूचना – घनसत्वकी सब गोलियाँ २५० मि.ग्रॅ. की है ।)

१ **आमलकी घन** (Emblica officinalis) **(२.५:१)** **१ गोली = ०.६२५ ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – आमला रक्तपित्त तथा प्रमेहनाशक, वृष्य, रसायन, पित्तनाशक और त्रिदोषनाशक है । यह बल्य तथा स्मृती, कांति और मेधावर्धक है ।

उपयोग – श्वास, कास, क्षय, पांडु, अग्निमांद्य, रसायन, आम्लपित्त इ.।

मात्रा – २/२ गोलियाँ दिनमे ४ बार ।

२ **अश्वगंधा घन** (Withania somnifera) **(५:१)** **१ गोली = १.२५० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – अश्वगंधा (असगंध) कषाय, बल्य, शुक्रवर्धक, रसायन, वातघ्न, कफघ्न, कुष्ठघ्न तथा शोथघ्न है ।

उपयोग – अशक्तता, वार्धक्य, वीर्यहीनता, क्षय,श्वेतप्रदर, शुक्रवर्धक, इ. ।

मात्रा – २/२ गोलियाँ दिनमे ३ बार ।

अनुपान – दूध ।

३ **अडुळसा घन** (Adhatoda vasica) **(४.५:१)** **१ गोली = १.१२५ ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – अडुळसा (अडुसा) उत्तेजक, कफनिस्सारक, शीतल, स्वर्य, कृमिघ्न, कुष्ठहर, रक्तपित्तनाशक तथा श्वास–कास हर है ।

उपयोग – कफविकार, राजयक्ष्मा, उर्ध्वगत रक्तपित, तमकश्वास, त्वचारोग इ.

मात्रा – २/२ गोलियाँ दिनमे २ बार ।

४ **अर्जुनसाल घन** (Terminalia arjuna) **(५.५:१)** **१ गोली = १.३७५ ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – अर्जुनकी छाल शीतल, हृद्य, कफपित्तनाशक होती है ।

उपयोग – हृदयविकार, क्षय, रक्तविकार, मेद, प्रमेह, प्रमेहजन्यव्रण इ. ।

मात्रा – १ गोली दिनमे ३ बार ।

५ **अनंतमूळ घन** (Hemidesmus indicus) **(५.५:१)** **१ गोली = १.३७५ ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – अनंतमूल तथा सारिवा मूत्रविरेचक, अग्निवर्धक, त्वचादोषहर, रक्तशोधक, कांतिवर्धक, रसायन, बल्य, स्तन्यशोधक, दाहप्रशमक तथा जीवनविनिमय क्रियाके लिए उत्तेजक है ।

उपयोग – कुष्ठ, कंडू, त्वचारोग, अग्निमांद्य, प्रदर, अरुची, रक्त दोष, इ. ।

मात्रा – २/२ गोलियाँ दिनमे ३ बार ।

६ **अशोकसाल घन** (Saraca indica) **(७:१)** **१ गोली = १.७५० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – अशोकछाल कषाय, शीतल, कांतिवर्धक, प्रदरनाशक तथा गर्भाशयके लिये बलदायक है ।

उपयोग – प्रदर, दाह, रक्तविकार, कृमि इ.।

मात्रा – १ गोली दिनमे २ बार ।

७. बलामूळ घन (Cida cordifolia) **(१२:१)** **१ गोली = ३.००० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – बला (खरैटी) शीतवीर्य, बल्य, रसायन, वृष्य, प्रजास्थापन एवं वातपित्तहर है ।

उपयोग – रक्तपित्त, प्रदर, श्वेतप्रदर, शुक्रमेह, शोथ, अर्धांगवात, मन्यास्तंभ, राजयक्ष्मा इ.।

मात्रा – १ गोली दिनमे २ बार ।

अनुमाप – दूध ।

८. बाकुची घन (बावंची घन) (Psoralea corylifolia) **(५:१)** **१ गोली = १.२५० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – बाकुची के बीज सौम्य उत्तेजक, वातनाडियों के लिए बल्य, कुष्ठघ्न, कृमिघ्न, त्वगदोषहर, व्रणशोधक, व्रणरोपक, मृदुविरेचक, मूत्रल एवं रसायन है ।

उपयोग – इसका अभ्यंतर प्रयोग श्वित्र, कुष्ठ, पामा, कण्डू, सोरियासिस एवं चर्म के अन्य शोथयुक्त विकारोंमें अत्यन्त लाभदायक ।

मात्रा – २/२ गोलियाँ दिनमे २ बार ।

९ बेहडा घन (Terminalia belerica) **(२:१)** **१ गोली = ०.५०० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – बेहडा कफपित्तनाशक, विरेचक, कासनाशक, केश्य तथा नेत्रोके लिए हितकर ।

उपयोग – खाँसी, गलेके रोग, स्वरभंग, मस्तिष्क के लिए बल्य ।

मात्रा – २/२ गोलियाँ दिनमे ४ बार ।

१० बेलगिरी घन (Aegle marmelos) **(२:१)** **१ गोली = ०.५०० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – बेलगर्भ (बिल्व फल मगज) अग्नीवर्धक, वातकफनाशक, बलकारक, तथा पाचक है । यह मृद् विरेचक है ।

उपयोग – मृद् विरेचक होने के कारण जीर्ण मलबद्धता, अर्श, आध्मान एवं कुपचन में लाभदायक । जिन्हे मलबद्धता तथा अतिसार क्रमश: बार बार होता है उन्हें नित्य सुबह देने से लाभदायक । संग्रहणीकी प्रारंभिक अवस्था, प्रवाहिका तथा रक्तार्श में उपयुक्त ।

मात्रा – २ गोलियाँ सुबह में ।

११ बहावामगज घन (Cassia fistula) **(३.५:१)** **१ गोली = ०.८७५ ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – बहावामगज (अमलतासका गुदा) मृद् विरेचक, अनुलोमक, दाहशामक एवं वेदना स्थापक है । विरेचक कार्य के लिये सोनामुखी के साथ देने से मरोड, शूल आदि नही होते ।

उपयोग – विरेचक

मात्रा – २/२ गमोलियाँ दिनमे ३ बार ।

१२ ब्राह्मी घन (Bacopa monnieri) **(७:१)** **१ गोली = १.७५० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – ब्राह्मी मेधावर्धक, शीतल, आयुर्वर्धक, रसायन, स्वर्य, रक्तका तनाव कम करनेवाली, हृदय के लिये बल्य, विरेचक, मूत्रल तथा वातनाडी संस्थान के लिये बल्य है ।

उपयोग – उन्माद, अपस्मार, स्वरभंग, मानसिक दौर्बल्य, बुद्धिमांद्य, मेध्य, रक्त तनाव ।

मात्रा – १ गोली दिनमे ३ बार ।

अनुपान – दूध ।

१३ भारंगमूळ घन (Clerodendrum serratum) **(११:१)** **१ गोली = २.७५० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – भारंगी रोचक, पाचक, अग्निदीपक, रक्तदोषहर, शोथघ्न, श्वासघ्न, कासघ्न तथा ज्वरहर है ।

उपयोग – श्वास, कास, प्रतिश्याय, क्षयजकास, फुप्फुस विकार तथा आमवात।

मात्रा – १ गोली दिनमे ३ बार ।

१४ भुईआमलकी घन (Phyllanthus niruri) **(८:१)** **१ गोली = २.००० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – भुआमला कासहर, श्वासहर, दाहशामक, यकृतोत्तेजक, मूत्रल, व्रणरोपक तथा ज्वरहर है ।

उपयोग – यकृतोद्भव व्याधी, जैसे कामला, यकृतवृद्धी, प्लीहावृद्धी, यकृतशोथ, हिपॅटायटीस बी, यकृत विषाक्तता इन सभीमें अत्यंत लाभकारी है । नियतकालिक ज्वर, मलेरिया, मूत्रदाह, मूत्रमार्ग के विकार, त्वग्रोग आदिमें उपयुक्त ।

मात्रा – २/२ गोलीयाँ दिनमें २ बार ।

१५ भृंगराज घन (माका घन) (Eclipta alba) **(६.५:१)** **१ गोली = १.६२५ ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – माका (भांगरा) कफवातनाशक, केश्य, त्वचाको साफ रखनेवाला, रसायन, बल्य, कृमिघ्न, शोथघ्न, दीपक, त्वचादोषहर तथा कासघ्न होता है ।

उपयोग – कुपचन, यकृतविकार, कास, श्वास, पांडु, चर्मरोग, कामला, यकृत और प्लिहावृद्धि, जीर्ण चर्मरोग, इंद्रलुप्त इ. ।

मात्रा – १/१ गोली दिनमें ३ बार ।

१६ चित्रक घन (Plumbago zeylanica) **(९:१)** **१ गोली = २.२५० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – चित्रकमूल अग्निवर्धक, पाचक, अर्शनाशक, रसायन, कृमिनाशक, कासनाशक, श्लेष्मानाशक तथा पचनसंस्था के विकारोमें उपयुक्त ।

उपयोग – अग्निमांद्य, अरोचक, अजीर्ण, अतिसार, अर्श, यकृत एवं प्लीहावृद्धी मे उपयुक्त ।

मात्रा – १ गोली दिनमे ३ बार ।

सूचना – गर्भवती स्त्रियोंको हानीकारक हो सकता है ।

१७. दारुहळद घन (Berberis aristata) **(१२:१) १ गोली = ३.००० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – दारूहलदी दीपक, पाचक, ग्राही, पित्त विरेचक, ज्वरहर, रसायन एवं त्वचादोष हर है ।

उपयोग – मलेरिया, विषमज्वर, कुपचन, त्वचाविकार, प्रदर, अतिसार, अत्यार्तव, यकृत तथा प्लीहा वृद्धि इ.।

मात्रा – १/१ गोली दिनमे ३ बार ।

१८. दशमूळ घन (Combination of Roots of Ten Herbs) **(११:१)१ गोली = २.७५० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – दशमूल, त्रिदोष नाशक, गर्भाशय शोधक और बल्य है ।

उपयोग – श्वास, खाँसी, शिर:शूल, शोथ, ज्वर, त्रिदोषघ्न, गर्भाशय शोधक इ.।

मात्रा – १/१ गोली दिनमे ३ बार ।

१९. एरंडमूळ घन (Ricinus communis) **(१३:१) १ गोली = ३.२५० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – एरंडके मूल वृष्य, वातहर, वातानुलोमक, वातशूलनाशक तथा शोथघ्न होते है ।

उपयोग – वाजीकर, संधीवात, संधिशोथ, कटिशूल, गृध्रसी (सायटिका) पार्श्वशूल, हृदयशूल इ.

मात्रा – २/२ गोलीयाँ दिनमे २ बार ।

सूचना – वातशूलमे शुंठीघन के साथ देनेसे अधिक लाभदायक ।

२०. गोखरू घन (Tribulus terrestris) **(४.५:१) १ गोली = १.१२५ ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – छोटा गोखरू बल्य, मूत्रल, मूत्रविरेचक, शोथहर, वेदनास्थापक, वंध्यत्वनाशक, पृष्टिकारक, अग्निदीपक, अश्मरीहर तथा वृष्य ।

उपयोग – अश्मरी, प्रमेह, हृदयरोग, वातरोग, सोजाक, वीर्यक्षीणता, मूत्रकृच्छ्र, वृक्क विकार, मूत्राघात ।

मात्रा – १/१ गोली दिनमे ३ बार ।

अनुपान – दूध ।

२१. गुडुची घन (Tinospora cordifolia) **(८:१) १ गोली = २.००० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – गुडुची (गिलोय) त्रिदोषघ्न, रसायन, बल्य, ज्वरहर, त्वचारोगहर, पित्तसारक, मूत्रजनन तथा विषघ्न है । इसमें व्याधि प्रतिकारक गुण भी विशेष रूप में है ।

उपयोग – त्वचारोग, कुष्ठ, जीर्णज्वर, विषमज्वर, ज्वर के पश्चात उत्पन्न हुई अशक्तता, मूत्रविकार, कु-पचन, मंद उदरशूल, जीर्ण आमवात, प्रमेह, कामला, व्याधी प्रतिकारक ।

मात्रा – १ गोली दिनमे ३ बार । डेंग्यु फिव्हर में ३/३ गोलिया दिनमें ४ बार।

२२. गुडमार घन (Gymnema sylvestre) **(६.५:१) १ गोली = १.६२५ ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – गुडमार (मेढाशिंगी या मधुनाशिनी) कफघ्न, वामक तथा प्रमेह नाशक है ।

उपयोग – प्रमेह ।
मात्रा – १ गोली दिनमे ३ बार ।
अनुपान – गोदूध ।

२३. गोरखमुंडी घन (Sphaeranthus indicus) **(७:१) १ गोली = १.७५० ग्रॅम चूर्ण**
गुणधर्म – गोरखमुंडी (मुंडी) दीपक, मूत्रल, अनुलोमक, रक्त शोधक, बल्य, कृमिघ्न, मूत्रमार्ग का शोधन करनेवाली है ।
उपयोग – जीर्ण अष्ठीला शोथ (क्रॉनिकप्रोस्टॅटिटिस), त्वचारोग, फोडे फुन्सी, गंडमाला, अर्श इ ।
मात्रा – १ गोली दिनमे ३ बार ।

२४. हरिद्रा घन (Carcuma longa) **(६.५:१) १ गोली = १.६२५ ग्रॅम चूर्ण**
गुणधर्म – हरिद्रा (हलदी) उत्तेजक, रक्तशोधक, त्वचादोषहर, दीपन, वातहर, विषघ्न तथा व्रण रोपक है ।
उपयोग – प्रतिश्याय (सर्दी–जुकाम), खाँसी, प्रमेह, प्रदर, कामला, यकृतविकार, त्वचारोग तथा रक्तविकार ।
मात्रा – २/२ गोलीयाँ दिनमे २ बार ।

२५. हरितकी घन (Terminalia chebula) **(२:१) १ गोली = ०.५०० ग्रॅम चूर्ण**
गुणधर्म – हरितकी (हरड) मृदविरेचक, अग्निदीपक, मेध्य, रसायन, त्रिदोषनाशक, आयुर्वर्धक, बृंहण और वातानुलोमक है ।
उपयोग – श्वास, कास, अर्श, कुष्ठ, उदररोग, मलबद्धता, वमन, कामला, प्लीहा, तथा यकृतविकार ।
मात्रा – २/२ गोलीयाँ दिनमे ३ बार ।

२६. जटामांसी घन (Nardostachys jatamansi) **(१०:१) १ गोली = २.५०० ग्रॅम चूर्ण**
गुणधर्म – जटामांसी शीतल, दीपक, पाचक, बल्य, रक्ताभिसरण के लिए उत्तेजक, त्रिदोषघ्न, मूत्रल, मृद्विरेचक, आर्तव जनन, वातनाडीशामक, मेध्य, केश्य, संज्ञास्थापक, ज्वरहर, त्वचारोगनाशक, कांतीवर्धक, वेदनास्थापक, हृदय के लिए बल्य तथा सौमनस्य जनन । यह क्षुधावर्धक तथा पाचक है । इसके सेवन से मूत्र की मात्रा बढती है । शरीर उष्ण होता है । नाडी सबल होती है । अल्पमात्रा मे बहुत दिन देने से मन:शांती प्राप्त होती है तथा उत्साह बढता है । मस्तिष्क तथा मज्जातंतुओंपर इसकी पोषक तथा उत्तेजक क्रिया होती है ।
उपयोग – मस्तिष्क तथा नाडी तंतुओंके विकार, भ्रमणयुक्त कंप, मानसिक थकावट, अपस्मार, मानसिक आघात, हृदय की धडकन, मस्तिष्क मे रक्त प्रवाह का असंतुलन होना, कंपवात, चक्कर, मूर्च्छा, उदरशूल, शोथ युक्त ज्वर, मुखपाक, त्वचारोग, पिडीतार्तव, रजोनिवृत्ती के समय की मानसिक तथा शारीरिक पिडा इ.
मात्रा – २ गोलीयाँ दिनमे २ बार ।

२७. जांभूळ बीज घन (Eugenia jambolana) **(३.५:१) १ गोली = ०.८७५ ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – जामुन की गुठली कफपित्तनाशक, पाचक, स्तंभन, प्रमेहनाशक, रक्तविकार नाशक है ।

उपयोग – रक्तविकार, प्रमेह इ. ।

मात्रा – २/२ गोलीयाँ दिनमे ३ बार ।

२८. जेष्ठमध घन (Glycyrrhiza glabra) **(६.५:१) १ गोली = १.६२५ ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – जेष्ठमध (मुलेठी) शीतवीर्य, बल्य, कांतिवर्धक, स्वादकारक, वीर्यजनक, केश्य, रसायन, कफशामक, मूत्रल, स्तन्यजनक, व्रणरोपक तथा शोथहर है ।

उपयोग – स्वरंभग, कास, श्वसनिकाशोथ, गलशोथ, रक्तप्रकोप, मूत्रमार्ग की जलन, आम्लपित्त, रक्तवमन, हृद्रोग, अपस्मार, कफविकार इ.।

मात्रा – २ गोलीयाँ दिनमे २ बार ।

२९. कवचबीज घन (Mucuna prurience) **(५:१) १ गोली = १.२५० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – कवचबीज (कौचबीज) अत्यंत वृष्य, बृंहण, वातनाशक, बल्य, कफपित्त तथा रक्तदोषनाशक है । यह उत्तेजक तथा वाजीकर है ।

उपयोग – दौर्बल्य, वीर्यहीनता, रक्तविकारनाशक ।

मात्रा – १/१ गोली दिनमे ३ बार ।

३०. करंजसाल घन (Pongemia pinnata) **(५.५:१) १ गोली = १.३७५ ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – करंजछाल व्रणनाशक, कुष्ठघ्न, योनि दोषहर, अर्शहर, कृमिनाशक तथा कासहर है ।

उपयोग – त्वचारोग, खुजली, प्रदर, व्रण, रक्तार्श इ.।

मात्रा – २/२ गोलीयाँ दिनमे २ बार ।

३१. कडुनिंबपत्र घन (Azadirachta indica) **(५:१) १ गोली = १.२५० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – नीमपत्र शोथघ्न, त्वचाके लिये उत्तेजक, त्वचादोषहर, व्रणशोधक, व्रणरोपक, कृमिघ्न, प्रतिदूषक, यकृत्तोत्तेजक तथा कुष्ठहर है ।

उपयोग – त्वचाविकार, व्रण, कुष्ठ, कामला आदीमें उपयुक्त।

मात्रा – १/१ गोली दिनमे ३ बार ।

३२. कांचनार घन (Bauhinia variegata) **(७:१) १ गोली = १.७५० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – कांचनार छाल ग्राही, रसायन, बल्य, व्रणशोधक तथा व्रण रोपक है । इसकी क्रिया त्वचापर तथा रसग्रंथीयोंपर होती है ।

उपयोग – गंडमाला, कुष्ठ, त्वचारोग, व्रण, गुदभ्रंश इ. ।

मात्रा – २/२ गोलीयाँ दिनमे २ बार ।

३३. कालमेघ घन (Andrographis paniculata) **(७:१) १ गोली = १.७५० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – दीपक, पाचक, कटुपौष्टिक, ज्वरहर । चिराइताका प्रतिनिधी द्रव्य माना

जाता है ।

उपयोग – छोटे बच्चोंमे बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ है । अजीर्ण, आध्मान, दंतोद्भवजन्य व्याधी, अतिसार एवं ज्वर में अत्यन्त गुणकारी ।

मात्रा – २/२ गोलीयाँ दिनमे २ बार ।

३४. काडेचिराईत घन (Swertia chirata) **(८:१) १ गोली = २.००० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – किराततिक्त (चिरायता) अग्निदीपक, पाचक, उत्तम, ज्वरहर, तिक्तपौष्टिक, पित्तविरेचक, यकृतबल्य एवं कृमिघ्न है ।

उपयोग – सभी प्रकारके ज्वर, विषमज्वर, मलेरिया, संसर्गजन्य, ज्वरजनित व्याधीमें गुणकारी । उत्तम आमपाचक होने के कारण इसके सेवन से भुख बढती है । आम्लपित्त, यकृतविकार जैसे कामला, पांडू, दाह, आध्मान, कृमीरोग, रक्तार्श इ.।

मात्रा – १/१ गोलीयाँ दिनमे २ बार ।

अनुपान – कोष्णजल ।

३५. कारले घन (Momordica charantia) **(४:१) १ गोली = १.००० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – कारले तथा करेला तिक्त, शीतल, मलभेदक, लघु तथा कृमिघ्न है ।

उपयोग – ज्वर, पित्त, कफनाशक, रक्तविकार, पांडू तथा प्रमेह ।

मात्रा – १ गोली दिनमे २ बार ।

३६. कुटकी घन (Picrorhiza kurroa) **(२.५:१) १ गोली = ०.६२५ ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – कुटकी शीतल, मलभेदक, अग्निदीपक, हृद्य, कफपित्तदोषनाशक, पाचक, कटुपौष्टिक, पित्तविरेचक, नियतकालिक ज्वरहर तथा यकृतविकार नाशक है ।

उपयोग – नियतकालिक ज्वर, संग्रहणी, कामला, पांडु, यकृतविकार, पुनरावर्तित ज्वर, हृदयदौर्बल्यसे उत्पन्न यकृतवृद्धि तथा उदरशोथ आदिमें उपयुक्त ।

मात्रा – १ गोली दिनमे २ बार ।

३७. कुटज घन (Holarrhena antidysenterica) **(५.५:१) १ गोली = १.३७५ ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – कुडाछाल कडवी, अग्निदीपक, अतिसारहर, ग्राही, ज्वरहर, एवं रक्तसंग्राहक है ।

उपयोग – अतिसार, पचनसंस्थानके विकार, जीर्णज्वर इ.।

मात्रा – १ गोली दिनमे ३ बार ।

३८. खदीरसाल घन (Acacia catechu) **(१३:१) १ गोली = ३.२५० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – खैरकी छाल कुष्ठघ्न तथा कफघ्न होती है ।

उपयोग – खुजली, कुष्ठ, श्वेतकुष्ठ, व्रण, शोथ, रक्तविकार, खाँसी, मुखरोग, दंतरोग, कृमि, प्रमेह इ. ।

मात्रा – १ गोली दिनमे २ बार ।

३९. लताकरंज घन (Caesalpinia bonducella) **(५:१) १ गोली = १.२५० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – कुबेराक्ष (पुतिकरंज) की बीजमज्ञा कटुपौष्टिक, नियतकालिकज्वर, प्रतिबंधक, शोथघ्न, वेदनाहर, गर्भाशयसंकोचक, वेदनास्थापक, रक्तस्तंभक एवं कृमिघ्न है ।

उपयोग – संततज्वर तथा मलेरियामें कालीमिर्च के साथ अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हुआ है । सुतिकाज्वर एवं प्रसूतावस्थामें उचित आर्तवशुद्धी होकर प्रभावी रूपसे गर्भाशयसंकोचन होता है । उदरशूल एवं किसीभी प्रकारकी वेदनामें २ या ३ लौंग के साथ लेना है । अंडवृद्धी एवं अंडशोथ मे एरंडपत्र स्वरस के साथ लेनेसे लाभदायक ।

मात्रा – २/२ गोलीयाँ दिनमे २ बार ।

४०. लोध्रसाल घन (Symplocos racemosa) **(६:१) १ गोली = १.५०० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – लोध्रछाल नेत्रविकार नाशक, ग्राही, कफपित्तनाशक, रक्तपित्तनाशक, ज्वरहर और शोथनाशक है । यह रक्तस्तंभक, व्रणरोपक तथा श्लेष्मानाशक है । यह रक्तवाहिनीयोंका संकोच करके रक्तस्राव बंद करती है ।

उपयोग – अतिसार, प्रवाहिका, अत्यार्तव, श्वेतप्रदर, ज्वर, यकृतविकार, रक्तविकार तथा सर्वांगशोथ ।

मात्रा – २/२ गोलीयाँ दिनमे २ बार ।

४१. मेथी घन (Trigonella foenumgraecum) **(४:१) १ गोली = १.००० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – स्निग्ध, वातानुलोमक, अग्निदिपक, आध्माननाशक, आर्तवशुद्धिकर, गर्भाशय संकोचक, दुग्धवृद्धिकर, शोथघ्न तथा बल्य है ।

उपयोग – प्रसूताके लिये अत्युत्तम, अग्निमांद्य, आमवात, प्रमेह । इसका परिणाम कॉडलिव्हर ऑईल जैसा होता है ।

मात्रा – २ गोलीयाँ दिनमे २ बार ।

४२. मंजिष्ठा घन (Rubia cordifolia) **(८:१) १ गोली = २.००० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – मंजिष्ठा स्वर्य, रक्तशोधक, ग्राही, गर्भाशय संकोचक, शोथघ्न, वेदनास्थापक, मूत्रल, वर्ण्य, प्रमेहघ्न, तथा योनिदोषहर है । यह वातनाडीशामक, व्रणरोपक और त्वचादोषहर भी है ।

उपयोग – कामला, मूत्रावरोध, अश्मरी, आर्तवविकार, अनार्तव, शोथ, रक्तातिसार, प्रमेह, शोथयुक्त फुफ्फुसविकार, त्वचारोग, रक्तप्रदर, क्षय, जीर्ण रक्तातिसार इ.।

मात्रा – १/१ गोली दिनमे ३ बार ।

४३. महामंजिष्ठादिक्वाथ घन (Combination of 45 herbs) **(७:१)१ गोली = १.७५० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – यह रक्तशुद्धिकर, रक्तदोषनाशक,कफदोषनाशक, मेदोदोषनाशक है।

उपयोग – जीर्ण त्वचारोग, रक्तदोष, मेदोदोष इ. में उपयुक्त ।

मात्रा – २/२ गोलीयाँ दिनमे २ बार ।

४४. महारास्नादिक्वाथ घन (Combination of 27 Herbs) **(७:१)१ गोली = १.७५० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – वातरोगनाशक, संधिगतवात, मज्जागतवात, कंपवात, पक्षाघात, अर्दित, जानु तथा जंधागत वातजन्य शूल, योनिरोग, शुक्ररोग, पुरुषलिंग रोग, वंध्यत्व नाशक।

उपयोग – संधिवात, कंपवात, वंध्यत्व।

मात्रा – २/२ गोलीयाँ दिनमे ३ बार।

४५. महासुदर्शन घन (Combination of 54 herbs) **(८:१) १ गोली = २.००० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – महासुदर्शन चूर्ण ज्वरघ्न, कफनाशक, अग्निवर्धक तथा शूलघ्न है।

उपयोग – सभी प्रकारके ज्वर, तृषा, श्वास, कास, कामला, पांडु, कटिशूल पार्श्वशूल, तथा जानूशूलमें उपयुक्त।

मात्रा – १ गोली दिनमे २ बार।

४६. मामेजवा घन (Enicostemma littorale) **(४.५:१) १ गोली = १.१२५ ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – मामेजवा (छोटा चिरायता) चिरायताका प्रतिनिधी है। यह दीपक, पाचक, वातानुलोमक तथा तिक्तपौष्टीक है।

उपयोग – कुपचन, अग्निमांद्य, कामला इ.।

मात्रा – २/२ गोली दिनमे २ बार।

४७. मोचरस घन (Bombax malabaricum) **(३.५:१) १ गोली = ०.८७५ ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – मोचरस (शाल्मलीका गोंद) शीतल, कषाय, ग्राही, स्निग्ध, वीर्यवर्धक, दाहशामक है।

उपयोग – प्रवाहिका, अतिसार, आम, कफ, पित्तविकार, रक्तप्रदर इ.।

मात्रा – २/२ गोलीयाँ दिनमे २ बार।

४८. निर्गुंडी घन (Vitex negundo) **(४.५:१) १ गोली = १.१२५ ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – निरगुंडी (संभालु) दीपन, वेदनास्थापन, वातकफहर, ज्वरघ्न, मूत्रल, आर्तवजनन, कृमिघ्न, मस्तिष्क के लिये बल्य, शोथघ्न, रसायन, वातनाशक तथा विषघ्न है।

उपयोग – आमवात, वातव्याधि, ज्वर, शूल, क्षय, कुष्ठ, शोथ, व्रण, कृमि, संधिशोथ, फुफ्फुसशोथ, आमवातिक संधिशोथ, कफज्वर इ.।

मात्रा – १/१ गोली दिनमे ३ बार।

अनुपान – शिलाजितके साथ देनेसे विशेष लाभदायक।

४९. नागरमोथा घन (Cyperus rotundus) **(६.५:१) १ गोली = १.६२५ ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – यह शीतल, दीपक, पाचक, वातानुलोमक, ग्राही, कृमिनाशक, स्वेदजनन, कफघ्न, मेध्य, स्तन्यशोधक तथा स्तन्य जनन है।

उपयोग – अरुची, वमन, आमातिसार, संग्रहणी, पित्तज्वर, प्रसूतिज्वर इ.।

मात्रा – २/२ गोलीयाँ दिनमे २ बार।

५०. निशोत्तर घन (Operculina turpethum) **(९:१) १ गोली = २.२५० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – त्रिवृतकी जड विरेचक तथा भेदनीय। सुखविरेचनमें यह श्रेष्ठ मानी गई है।

उपयोग – श्रेष्ठविरेचक होने के कारण अर्श, उदर, गुल्म आदिमें इसका प्रयोग किया जाता है । सोंठ या सैंधव के साथ योजना करनेसे पेटमें मरोड, शूल आदि नही होते । ज्वर, रक्तपित्त, विसर्प, वातशोफ, कामला एवं राजयक्ष्मा में विरेचक । निसोध के साथ हरितकी देनेसे सुखपूर्वक विरेचन होता है ।

मात्रा – २ गोलीयाँ रातमें सोने से पूर्व अथवा कोष्ठानुसार ।

अनुपान – उष्ण जल अथवा उष्ण दूध ।

५१. पुनर्नवा घन (Boerhaavia diffusa) **(७:१) १ गोली = १.७५० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – पुनर्नवा मूत्र विरेचक, कफघ्न, शोथहर, उदररोगहर है ।

उपयोग – शोथ, सर्वांगशोथ, उदररोग, कामला, मूत्राल्पता, हृद्रोग आदि ।

मात्रा – २/२ गोलीयाँ दिनमे २ बार ।

५२. पारिजातक घन (Nyctanthes arbortristis) **(५:१) १ गोली = १.२५० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – पारिजातक के पत्ते ज्वरनाशक, कफनाशक, मृदूविरेचक, यकृत के लिये उत्तेजक, कृमिनाशक, तिक्तपौष्टिक होते है ।

उपयोग – गृध्रसी (सायटिक) जीर्णज्वर, मलेरिया, यकृत एवं प्लिहावृद्धी इ.।

मात्रा – मलेरियामें २/२ गोलियाँ दिनमें ३ बार त्रिकटु के साथ । जीर्ण ज्वरमें २/२ गोलीयाँ २ बार गुडुची घन के साथ । गृध्रसीमें २ गोलीयाँ निरगुंडी घनकी २ गोलीयोंके साथ दिन में २ बार ।

अनुपान – दूध या घृत ।

५३. पाषाणभेद घन (Saxifraga ligulata) **(५.५:१) १ गोली = १.३७५ ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – पाषाणभेद, मूत्रल, अश्मरीघ्न, ग्राही तथा श्लेषमघ्न है ।

उपयोग – मुत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, अश्मरी, आमातिसार इ.।

मात्रा – २/२ गोलीयाँ दिनमे २ बार ।

५४. पिंपळी (पिपल) घन (Piper longum) **(२:१) १ गोली = ०.५०० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – छोटी पिपल, अग्निदीपक, वृष्य, स्निग्ध, वातकफघ्न, मृदुविरेचक तथा रसायन है ।

उपयोग – श्वास, कास, उदररोग, ज्वर, कुष्ठ, प्रमेह, गुल्म, अर्श, प्लीहा, शूल और आमवात, पांडुरोग, हृद्रोग इ.।

मात्रा – १/१ गोली दिनमे ३ बार ।

अनुपान – दूध ।

५५. रास्ना घन (Inula recemosa) **(५:१) १ गोली = १.२५० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – रास्ना आमपाचक, कफवातहर तथा शोथहर है ।

उपयोग – शोथ, श्वास, उदररोग, कास, वातशूल, आमवात, अनार्तव, कष्टार्तव, फुफ्फुसविकार, दमा, जीर्ण श्वसनिका शोथ इ.।

मात्रा – २/२ गोलीयाँ दिनमे २ बार ।

५६. रिंगणी घन (Solanum xanthocarpum) **(८:१)** **१ गोली = २.००० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – रिंगणी (कटैरी) अग्निदीपक, लघु, रूक्ष, मूत्रल, कफनिस्सारक, ज्वरहर, वेदनास्थापक है ।

उपयोग – कास, श्वास, सर्दी–जुकाम, ज्वर, बदन का दर्द, गलेका शोथ, श्वासनलिका शोथ इ.।

मात्रा – १/१ गोली दिनमे ३ बार ।

५७. सप्तरंगी घन (Casearia esculenta) **(१०:१)** **१ गोली = २.५०० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – सप्तरंगी यकृत विकार नाशक है ।

उपयोग – यकृतवृद्धि, अर्श, यकृतोद्भव मधुमेह इ.।

मात्रा – १/१ गोली दिनमे ३ बार ।

५८. सर्पगंधा घन (Rauwolfia serpentina) **(७:१)** **१ गोली = १.७५० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – सर्पगंधा (छोटाचाँद या अडकई) कडवी, दीपन, वातानुलोमक, कृमिघ्न, पौष्टिक, रक्ततनावको दूर करनेवाली, गर्भाशय उत्तेजक तथा विषघ्न है ।

उपयोग – रक्तप्रकोप, कृमि, अतिसार, जीर्णज्वर, तमक श्वास इ.।

मात्रा – १/१ गोली दिनमे ३ बार ।

५९. शरपुंखा घन (Tephrosia purpurea) **(७.५:१)** **१ गोली = १.८७५ ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – शरपुंखा (सरफोंका) अनुलोमक, पित्तसारक, मूत्रजनक, कृमिघ्न, रक्तशोधक एवं बल्य है ।

उपयोग – आध्मान, कुपचन, अतिसार तथा कासमें, यकृतवृद्धी एवं प्लीहावृद्धी में गुंल्म में हरितकी के साथ देने से अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हुआ है। हरितकी के साथ तथा अर्श में तक्र के साथ देते है । रक्तस्राव में तण्डुलांबु के साथ दिया जाता है ।

मात्रा – २/२ गोलीयाँ दिनमे २ बार ।

अनुपान – तक्र

६०. शतावरी घन (Asparagus recemosus) **(३:१)** **१ गोली = ०.७५० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – शतावरी रसायन, मेध्य, अग्निवर्धक, बल्य, नेत्र विकार नाशक, शुक्रवर्धक, स्तन्यजनन, त्रिदोषघ्न तथा वयस्थापन है ।

उपयोग – शुक्रमेह, नंपुसकता, नेत्ररोग, अशक्तता, मूत्रकृच्छ्र स्तन्यजनन इ.।

मात्रा – २/२ गोलीयाँ दिनमे ३ बार ।

अनुपान – दूध

६१. सफेद मुसळी घन (Asparagus adscendens) **(२.५:१)१ गोली = ०.६२५ ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – स्नेहन, बृंहण, रसायन, वृष्य तथा बल्य है ।

उपयोग – नपुंसकता, अशक्तता, शुक्रमेह, प्रदर, अतिसार इ.।

मात्रा – २/२ गोलीयाँ दिनमे ३ बार दुध के साथ ।

६२. शंखपुष्पी घन (Convolvulus pluricaulis) **(७.५:१) १ गोली = १.८७५ ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – सारक, मेध्य, रसायन, मानसरोगनाशक, कांतिवर्धक, बल्य, अग्निवर्धक तथा कुष्ठघ्न है ।

उपयोग – अपस्मार, मानसरोग, बुद्धिमांद्य, स्मृतिवर्धक इ.।

मात्रा – १/१ गोली दिनमे २ बार ।

६३. सोमलता घन (Ephedra gerardiana) **(६:१) १ गोली = १.५०० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – सोमलता त्रिदोषहर, श्वासन, मूत्रजनन, यकृतोत्तेजक, ज्वरघ्न, आमनाशक, वातहर, शोथहर, मस्तिष्क के लिये उत्तेजक है ।

उपयोग – हृदयदौर्बल्य, श्वास, कास इ.।

मात्रा – २/२ गोलीयाँ दिनमे २ बार ।

६४. सुंठी घन (Zingiber officinale) **(४:१) १ गोली = १.००० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – रुचिकारक, पाचक, लघु, वात, कफ तथा विबन्ध दूर करनेवाली, ग्राही, स्निग्ध है ।

उपयोग – श्वास, कास, शूल, हृद्रोग, श्लीपद, शोथ, अर्श, अनाह, उदर, अतिसार इ. में उपयुक्त।

मात्रा – २/२ गोलीयाँ दिनमे २ बार ।

६५. टाकळाबीज घन (Cassia tora) **(७.५:१) १ गोली = १.८७५ ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – टाकळाबीज (चकवड) कुष्ठघ्न, कासघ्न, दीपन, पाचन, बल्य, त्वचादोषहर है ।

उपयोग – सभी प्रकारके त्वचारोग, कुष्ठ, खुजली इ.।

मात्रा – १/१ गोली दिनमे ३ बार ।

६६. तुळशी घन (Ocimum sanctum) **(७:१) १ गोली = १.७५० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – तुलसी हृद्य, अग्निदीपक, कुष्ठघ्न, रक्तविकारनाशक, ज्वरघ्न, तथा कफनाशक है ।

उपयोग – सभी प्रकारके त्वचारोग, कुष्ठ, खुजली, ज्वरघ्न, कासघ्न, कफघ्न और मलेरिया में उपयुक्त इ. ।

मात्रा – १/१ गोली दिनमे ३ बार ।

६७. त्रिफळा घन (Mixture of Terminalia chebula, embelica officinalis and Terminalia belerica) **(२:१) १ गोली = ०.५०० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – त्रिफळा कफ – पित्तनाशक, कुष्ठघ्न, प्रमेहघ्न, सारक, नेत्र विकार नाशक, अग्निदीपक तथा विषमज्वरनाशक है ।

उपयोग – मलबद्धता, नेत्ररोग, अग्निमांद्य, त्वचारोग, सौम्यसारक इ.।
मात्रा – २/२ गोलीयाँ दिनमे ३ बार ।

६८. वरुण घन (Crataeva nurvala) **(९:१)** **१ गोली = २.२५० ग्रॅम चूर्ण**
गुणधर्म – वरूण (वायवर्णा) उष्णट, मलभेदक, अग्निदीपक, अश्मरिहर तथा रूक्ष होता है ।
उपयोग – यह मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी, गुल्म, वातरक्त, आदिमें उपयुक्त है ।
मात्रा – १/१ गोली दिनमे ३ बार ।

६९. विदारीकंद (Pueraria tuberosa) **(३:१)** **१ गोली = ०.७५० ग्रॅम चूर्ण**
गुणधर्म – विदारीकंद (क्षीरविदारी) अनुलोमक, पित्तसारक, स्तन्यजनन, स्नेहन, अग्निवर्धक, पाचक, तथा पौष्टिक होता है ।
उपयोग – स्तन्याल्पता में द्राक्षासव के साथ, दुर्बलतामें घृत और शर्करा के साथ, यकृत तथा प्लिहावृद्धीमें उपयुक्त । इसका उपयोग कॉडलिव्हर ऑईल से अच्छा होता है ।
मात्रा – २/२ गोलीयाँ दिनमे २ बार ।

७०. विडंग घन (Emblica ribes) **(६:१)** **१ गोली = १.५०० ग्रॅम चूर्ण**
गुणधर्म – विडंग (वायविडंग), अग्निवर्धक, कफनाशक, कृमिघ्न, शूलनाशक, उदररोगनाशक, दीपक, पाचक, वातहर, वातनाडीसंस्थान के लिये बल्य, रक्तशोधक तथा रसायन है ।
उपयोग – स्फीतकृमि (टेमवर्म), शूल, अग्निमांद्य, कुपचन, त्वचारोग इ.।
मात्रा – १/१ गोली दिनमे ३ बार ।

७१. विजयसार घन (Pterocarpus marsupium) **(९:१)** **१ गोली = २.२५० ग्रॅम चूर्ण**
गुणधर्म – असाणा (विजयसार) त्वचाके लिये हितकारक, रसायन, केशवर्धक, प्रमेहनाशक तथा पित्तनाशक है ।
उपयोग – प्रमेह, कुष्ठ, श्वेतकुष्ठ, रक्ताविकार ।
मात्रा – १ गोली दिनमें २ बार ।

७२. वेखंड घन (Acorus Calamus) **(४:१)** **१ गोली = १.००० ग्रॅम चूर्ण**
गुणधर्म – वचा कफनिस्सारक, वातानुलोमक, दीपक, पाचक, मेध्य, वृष्य, कृमिघ्न एवं शूलघ्न है ।
उपयोग – अपस्मार, अपतंत्रक एवं अंगघात आदि रोगों के लिए । इसके सेवनसे धारणाशक्ति बढती है । वचा, ब्राह्मी तथा शंखपुष्पी एकत्रित सेवन करनेसे उन्माद, स्मरणशक्ति का ऱ्हास एवं वाणी की जडता आदि दूर होकर बुद्धि का विकास होता है । बेहोशी एवं तंद्रा दूर करनेके लिए इसका अच्छा उपयोग होता है । सर्दी, गले की सूजन खाँसी, विषमज्वर, कर्णमूलग्रंथिशोथ, बच्चोंका सूक्ष्म श्वसनिका शोथ, सुखी खाँसी, आदिमें गुणकारी ।
मात्रा – १/१ गोली दिनमे २ बार ।

७३. धमासा घन (Fagonia oretica) (५:१) **१ गोली = १.२५० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – धमासा वातपित्तशामक, कफनि सारक, शहप्रशमक, मास्तिष्कबल्य, रक्तप्रसादक स्तंभक, ज्वरघ्न, मुत्रल है ।

उपयोग – च्छर्दी, ग्रहणी, ज्वर, विषमज्वर, रक्तपित्त, वातरक्त, प्रतिश्याय, कास, श्वास, मूत्रकुच्छ्र, भ्रम, मूर्च्छा, आदिमें उपयुक्त ।

मात्रा – १ गोली दिनमें २ बार

७४. शेवगापत्र घन (Moringo Oleifera) (४:५:१) **१ गोली = १.१२५ ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – कफवातशामक, रोचन, दिपन, पाचन, जीवाणुनाशक, स्वेदजनन, पोष्टक है ।

उपयोग – नाडीदौर्बल्य, अग्रिमांद्य, अरुची, हृद्दौर्बल्य, मेदोरोग, कष्टर्तव, त्वचाविकार इ. ।

आधुनिक उपयोग – अनेक जीवनसत्वोका स्त्रोत, नैसर्गिक लोह, कॅल्शिअम का स्त्रोत

मात्रा – १ गोली दिनमें २ बार

७५. बाभूळशेंग घन (Acacia Arabica) (२:५:१) **१ गोली = ०.६२५ ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – स्निग्ध, कफपित्तशामक, स्तंभक, रक्तपित्तशामक, कृमिघ्न, बल्य है ।

उपयोग – अतिसार, प्रवाहिका, अर्श, कृमी, रक्तपित्त, शीघ्रपतन, स्वप्नदोष आदिमें उपयुक्त ।

मात्रा – १ गोली दिनमें २ बार

७६. चैतन्य रसपाचक घन (५:१) **१ गोली = २.१२५ ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – रसगतज्वर पांडू, अरुची, हृदयरोग, थायरॉईड, पालित्य, त्वचाविकार, माहवारी, सम्धद्धीत, समस्या, श्वेतप्रदर.

मात्रा – १ गोली दिनमें २ बार

७७. चैतन्य रक्तपाचक घन (७:१) **१ गोली = ३.००० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – रक्तगत ज्वर, त्वचाविकार, रक्तपित, रक्तप्रदर, रक्तार्ष, मुखपाक, शीतपित्त

मात्रा – १ गोली दिनमें २ बार

७८. चैतन्य मांसपाचक घन (४:१) **१ गोली = २.००० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – मांसगत ज्वर, अर्बुद, ग्रंथी इ.

मात्रा – १ गोली दिनमें २ बार

७९. चैतन्य मेदोपाचक घन (१०:१) **१ गोली = ४.००० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – स्थौल्य (मेदोरोग) थायरॉईड, प्रमेह इ.

मात्रा – १ गोली दिनमें २ बार

८०. **चैतन्य मज्जास्थिपाचक घन** (४:१) **१ गोली = २.००० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – अस्थि व संधी विकार, आमवात, केशपतन इ.

मात्रा – १ गोली दिनमें २ बार

८१. **पथ्यादि क्वाथ घन** (४:१) **१ गोली = २.००० ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – त्रिदोषहर (कफपित्तहर), मलानुलोमक, शुलहर, चक्षुष्य

उपयोग – शिरःशुल, अर्धावभेदक, सुर्यावर्त, शंखक, दन्तशुल, पटल, शुक्र, अक्षिरोग, नक्त्यांधण

मात्रा – १ गोली दिनमें २/३ बार

८२. **रसायन घन** (४:५०:१) **१ गोली = १.१२५ ग्रॅम चूर्ण**

गुणधर्म – त्रिदोषहर, बल्य, दाहशामक, रक्तवर्धक, शोथघ्न, स्वास्थ्यवर्धक, रसायन.

उपयोग – मूत्रविकार, खालित्य, पालित्य, शुक्रक्षय, सामान्य दौर्बल्य, व्याधीप्रतिकार क्षमता बढानें और कायाकल्पक के रुप में उपयुक्त ।

मात्रा – १ गोली दिनमें २ बार

– घनसत्व निर्माण विधी –

१) औषधी निर्माण हेतु खरीदी गयी सभी जडीबुटीयाँ प्रथमत: कंपनीके दर्जा नियंत्रण प्रयोगशालामें परीक्षण तथा जाँच करवाने हेतु भेजी जाती है । वहाँ पूर्वसूचित मानकों के अनुसार उनका पूरा परीक्षण किया जाता है । जो वनस्पतियाँ परीक्षणमे सफल होती है, वह साफ करकें भांडारमें दक्षतापुर्वक रखी जाती है ।

२) जिस वनस्पतिका घन बनाना होता है, उनको पल्वरायझरमे पीसकर उसकी भरड (खुरदरा चुर्ण) बनायी जाती है ।

३) सभी औषधी वनस्पतियाँ, पत्ते / फुल / बीज / फल (मृदु) तथा गुदा / मूल / छालके (कठीण) स्वरूपमें होती है । घनसत्व करते समय प्रत्येक वनस्पतिका उपरोक्त अंगोमेसे प्रयुक्त अंकही लिया जाता है । पत्ते, फुल, फलोंका गुदा, गोंद आदि अंग मृदु होते है तथा मुल और छाल कठीण होते है । अत: घनसत्व बनानेके लिये हरेक वनस्पतिका प्रयुक्त अंग देखकर काढा द्रव्य की मात्राके ८ से १६ गुना पानी डालकर काढा बनाया जाता है ।

४) जो काढाद्रव्य जादा कठीण होते है, उन्हे काढा बनाने के पूर्वसंध्यापर ४ ते ६ गुना पानी डालकर ८ से १२ घंटोतक भिगोकर रखा जाता है इससे उन द्रव्योंमे जो पानी मे घुलनशील द्रव्य होते है, वह ठीकसे अलग होकर काढा अपेक्षानुसार बनता है ।

५) काढा बनानेके लिये धीमी आँच दी जाती है , जिससे वनस्पतियों मे स्थित उपयुक्त द्रव्य पानी मे घुल जाते है । यह प्रक्रिया ६ से ८ घंटे चलती है । काढा ठीक तरहसे छान लिया जाता है ।

६) उपरोक्त विधीसे तयार किया गया काढा इव्हॅपोरेटरमे डालकर उसे गाढा बनाने १२ से १६ घंटोतक के लिये धीमी आँचपर रखा जाता है । इससे प्राय: जलांश ८०% ते ९०% से घटकर ३०% से ४०% तक आ जाता है ।

७) इस प्रकार गाढा बनाया गया काढा इव्हॅपोरेटरसे निकालकर ट्रे ड्रायरमें रखा जाता है । इस मशीनमें काढे को सुखाते समय अपरोक्ष गर्मी दी जाती है । इसके कारण काढा बगैर जले पूरा सूख जाता है ।

८) यह सुखा हुआ घनसत्व ट्रे ड्रायरसे बाहर निकालकर मल्टीमील में पीसा जाता है । उसे छानकर महीन चूर्ण अलग निकाला जाता है और उसके ग्रॅन्युअल्स बनाये जाते है।

९) ग्रॅन्युअल्स बनाते समय, या उसके पश्चात किसी भी घनसत्वमें किसी प्रकारका चूर्ण, रंगद्रव्य, प्रिझर्व्हेटीव्ह, ॲडेटिव्ह या बाईंडिंग मटेरिअल नही डाला जाता । ग्रॅन्युअल्स बनानेके बाद पूर्वसुनिश्चित मात्रा की (२५० मिली ग्राम) गोलियाँ रोटरी टॅबलेट काँप्रेशन मशीनकी मदतसे तयार की जाती है । गोलिया तयार होते समय उनकी मात्रा तथा नियंत्रण किया जाता है ।

एकेरी वनस्पतींचे घनसत्व

अनु.	औषधाचे नांव	Latin Name	Common Name
१	अडुळसा घन	Adhatoda Vasica	वासा, वसाका, आटरुषक
२	आमलकी घन	Emblica Officinalis	आमला, धात्री
३	अनंतमूळ घन	Hemidesmus Indicus	सारिवा, उपळसरी
४	अर्जुन घन	Terminalia Arjuna	अर्जुन
५	अशोक घन	Saraca Indica	असोक
६	अश्वगंधा घन	Withania Somnifera	असकंद, बलदा
७	बहावामगज घन	Cassia Iistula	आरग्वध, अमलतास
८	बाकुची घन	Psoralea Corylifolia	बावंची, बावची
९	बलामुळ घन	Sida Cordifolia	अतिबला, खरेटी
१०	बाभूळशेंग घन	Acacia Arabica	बब्बुल, आभा
११	धमासा घन	Fagoniaoretica	दुरालभा, धन्वयास
१२	बेहडा घन	Terminalia Belerica	बिभितक, अक्ष
१३	बेलगिरी घन	Aegle Marmelos	बिल्व
१४	भारंगमूळ घन	Clerodendrom Serratum	भारंगी
१५	भृंगराज घन	Eclipta Alba	माका, केशराज
१६	भुईआमलकी घन	Phyllanthus Niruri	तामलकी, भूईआवळी
१७	ब्राह्मी घन	Bacopa Monnieri	नीरब्राह्मी
१८	चित्रक घन	Plumbago Zeylanica	चित्रा
१९	दारूहरिद्रा घन	Berberis Aristata	दार्वी, पितदारू, दारूभद्र
२०	एरंडमूळ घन	Ricinus Communis	गंधर्व, वातारी
२१	गोखरू घन	Tribulus Terrestris	गोक्षुर, त्रिकंटक, श्वदंष्ट
२२	गोरखमुंडी घन	Sphaeranthus Indicus	मुण्डी
२३	गुडमार घन	Gymnema Sylvestra	मधुनाशीनी
२४	गुडूची घन	Tinospora Cordifolia	गुळवेल, अमृता
२५	हरिद्रा घन	Curcuma Longa	निशाख्या, काचनी, हळद
२६	हरीतकी घन	Terminalia Chebula	हिरडा, अभया
२७	जांभूळबीज घन	Eugenia Jambolana	जामून
२८	जटामांसी घन	Nardostachys Jatamansi	भूतजटा, जटीला
२९	ज्येष्ठमध घन	Glycyrrhiza Glabra	यष्टी, मुलेठी
३०	काडेचिरायता घन	Swertia Chirata	किराततिक्त, चीरायता
३१	कडूनिंबपत्र घन	Azadirachta Indica	निंब, फरिभद्र, नीम
३२	कालमेघ घन	Andrographis Paniculata	किरायता, छोटा चीरायता
३३	कांचनार घन	Bauhinia Variegata	कोविदार, कांचन, युगपत्रक
३४	करंजसाल घन	Pongemia Pinnata	घृतकरंज, चीरबिल्वा, नक्तमाल
३५	कारले घन	Momordica Charantia	करेला

अनु.	औषधाचे नांव	Latin Name	Common Name
३६	कवचबीज घन	Mucuna Purita	कपिकछु, आत्मगुप्ता, खाजकुहिली
३७	खदीर घन	Acasia Catechu	खैर, इरीमेद
३८	कुटज घन	Holarrhena Antidysenterica	कुडा, वत्सक, यवफल
३९	कुटकी घन	Picrorhiza Kurroa	कटुका, तिक्ता
४०	लताकरंज घन	Caesalpinia Bonducella	पुतिकरंज, सागरगोटा, कुबेराक्ष
४१	लोध्र घन	Symplocos Racemosa	तिल्वा, शावर
४२	मामेजवा घन	Enicostema Littorle	मामेजव, मामज्जक, छोटा त्रिरायता
४३	मंजिष्ठा घन	Rubia Cordifolia	मजीठ अरुणा, रक्तांगी
४४	मेथी घन	Trigonella Foenumgraecum	मेथिका
४५	मोचरस घन	Bombax Malabaricum	शाल्मली, काटेसावर
४६	नागरमोथा घन	Cyperus Rotundus	मुस्ता, मोथा
४७	निर्गुंडी घन	Vitex Nigundo	शेफाली
४८	निशोत्तर घन	Ipomoea Turpethum	त्रिवृत्त, निशोथ
४९	पारिजातक घन	Noictanthes Arbor-tristis	पारीजात, हरसिंगार
५०	पाषाणभेद घन	Bergenia Iliata	अश्मभेद
५१	पिंपळी घन	Piper Longum	पिपली, कृष्णा, मागधी
५२	पुनर्नवा घन	Boerhaavia Diffusa	शोथघ्नी
५३	रास्ना घन	Pluchea Lanceolata	सुरसा
५४	रिंगणी घन	Solanum Anthocarpum	कंटकारी, भुईरिंगणी , रानवांगे
५५	सफेदमुसळी घन	Asparagus Adscendens	मुशली
५६	सप्तरंगी घन	Salacia Chinesis	सप्तरंगी
५७	सर्पगंधा घन	Rauvolfia Serpentina	सर्पगंधा
५८	शंखपुष्पी घन	Convulvolus Pluricaulis	सांखवेल
५९	शरपुंखा घन	Tephrosia Purpurea	उन्हाळी, प्लिहारि
६०	शतावरी घन	Asparagus Racemosus	नारायणी, शतमुली, वरी
६१	शेवगापत्र घन	Moringaoleifera	शिग्रु, बहल
६२	सोमलता घन	Ephedra Gerardiana	सोमवल्ली
६३	सुंठ घन	Zingiber Officinale	विश्वा, महौषधि, शुण्ठी
६४	टाकळाबीज घन	Cassia Tora	प्रपुन्नडा, चक्रमर्द
६५	तुळशी घन	Ocimum Sanctum	तुलसी, सुरसा, कृष्णा
६६	वरूण घन	Crataevanurvala	वायवर्णा
६७	वेखंड घन	Acorus Calamus	वचा, उग्रगंधी
६८	विडंग घन	Embelia Ribes	वावडिंग, कृमिघ्न
६९	विदारीकंद घन	Pueraria Tuberosa	भुईकोहळा
७०	विजयसार घन	Pterocarpus Marsupium	बीजक, असाना

धातुपाचक घन

Product Name	Conc Ratio	Ratio	Indication	Dose
चैतन्य रसपाचक घन	५ : १	१ गोळी = २.१२५ ग्रॅम चूर्ण	रसगतज्वर, पांडू, अरुची,हृदरोग, थायरॉईड, पालित्य, त्वचाविकार, पाळीच्यासंबंधीत समस्या, श्वेतप्रदर.	१ गोळी २ वेळा
चैतन्य रक्तपाचक घन	७ : १	१ गोळी = ३.००० ग्रॅम चूर्ण	रक्तगतज्वर, त्वचाविकार, रक्तपित्त, रक्तप्रदर, रक्तार्ष, मुखपाक, शीतपित्त.	१ गोळी २ वेळा
चैतन्य मांसपाचक घन®	४ : १	१ गोळी = १.७५० ग्रॅम चूर्ण	मांसगतज्वर, अर्बुद, ग्रंथी. इ.	१ गोळी २ वेळा
चैतन्य मेदोपाचक घन	१० : १	१ गोळी = २.७५० ग्रॅम चूर्ण	स्थौल्य (मेदोरोग), थायरॉईड, प्रमेह इ.	१ गोळी २ वेळा
चैतन्य मज्जास्थिपाचक घन®	४ : १	१ गोळी = १.६२५ ग्रॅम चूर्ण	अस्थि व संधीविकार, आमवात, केशपतन इ.	१ गोळी २ वेळा